DRA Annual International Conference On
Developed India @2047: Global Pathways for Sustainable Socio- Economic, Linguistic, Science and Technological Transformation

Ind. Jr. of Mod. Res. and Rev *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 [Special Issue 1] Year 2026*

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

हिंदी कहानी में यथार्थ के बदलते रंग

डॉ. संगीता एम. सोलंकी
श्रीमती आर.डी.शाह आर्ट्स एंड श्रीमती वी.डी.शाह कॉमर्स कॉलेज, धोलका, गुजरात, भारत

Corresponding Author: * डॉ. संगीता एम. सोलंकी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21359999

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र हिंदी कहानी में यथार्थवाद की विकास-यात्रा और उसके निरंतर बदलते स्वरूप का अनुशीलन करता है। यह विवेचन प्रेमचंद-पूर्व युग के सुधारवादी एवं आदर्शोन्मुख यथार्थ से आरंभ होकर प्रेमचंद के आदर्श से नग्न यथार्थ की ओर बढ़ते सफर ('पंच परमेश्वर' से 'कफन' तक) और फिर स्वातंत्र्योत्तर आधुनिकता-बोध, नई कहानी आंदोलन तथा अस्तित्ववादी यथार्थ तक विस्तृत है। यह अध्ययन दर्शाता है कि किस प्रकार कहानी का यथार्थ केवल सामाजिक चित्रण न रहकर व्यक्ति के अंतर्द्वंद्व, महानगरीय अकेलेपन, स्त्री-चेतना और हाशिये के समाज की आवाज़ों तक पहुँचा है। इस प्रकार यथार्थ के बदलते रंगों का अध्ययन वस्तुतः भारतीय समाज के मानसिक और सांस्कृतिक विकास का अध्ययन बन जाता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 01-01-2026
- **Accepted:** 12-06-2026
- **Published:** 30-06-2026
- **MRR:**4(SP1); 2026: 271-274
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सोलंकी सं. एम. हिंदी कहानी में यथार्थ के बदलते रंग. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(SP1):271-274.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: यथार्थवाद, हिंदी कहानी, प्रेमचंद, आदर्शोन्मुख यथार्थ, नग्न यथार्थ, नई कहानी आंदोलन, आधुनिकता-बोध, अस्तित्ववाद, स्त्री विमर्श, सामाजिक चेतना।कास

© 2026 डॉ. संगीता एम. सोलंकी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारत साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि उसकी सूक्ष्म संवेदनाओं का दस्तावेज भी है। हिंदी कहानी ने अपनी विकास यात्रा में कल्पना और उपदेश के धरातल से उठकर यथार्थ की ठोस जमीन को तलाश है। यथार्थवाद का अर्थ केवल वस्तु स्थिति का चित्रण नहीं, बल्कि मानव जीवन की विसंगतियों, संघर्षो और अंतर्दंदों को उसकी समग्रता में प्रस्तुत करना है। प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से लेकर आज के उत्तर आधुनिक यथार्थ तक कहानी के कई रंग बदले हैं। हिंदी कहानी, विधा के रूप में अपनी शैशवावस्था से ही समाज की धड़कनों को दर्ज करती आई है। यथार्थवाद वह दृष्टि है जो जीवन को उसकी नग्नता, कठोरता और सत्यता के साथ बिना किसी काल्पनिक रंगत के प्रस्तुत करती है। पाश्चात्य साहित्य में 'रिअलिज्म' के आगमन ने जिस तरह साहित्य के प्रतिमान बदले, उसका गहरा प्रभाव विश्व 20वीं सदी की हिंदी कहानी पर भी पड़ा। आरंभिक हिंदी कहानियों में जहाँ अलौकिकता और तिलस्म का प्रभाव था, वहीं आधुनिक कहानी मनुष्य के अस्तित्वगत संघर्षो और महानगरीय त्रासदी का दस्तावेज बन गई है।

यथार्थवाद का तात्पर्य केवल 'जैसा है वैसा ही' चित्रण करना नहीं है, बल्कि उन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों का अनावरण करना है जो मनुष्य की नियति को संचालित करती है। हिंदी कहानी में यथार्थवाद का सफर एक सीधी रेखा में नहीं चला है। यह कभी 'आदर्श' की उंगली पड़कर चला, तो कभी मनोविश्लेषण की गहराइयों में उतरा, और कभी राजनीतिक चेतना के साथ वर्ग - संघर्ष का हथियार बना। आज के वैश्वीकरण और सूचना- क्रांति के दौर में यथार्थ अब केवल 'देखा' जाने वाला सत्य नहीं रह गया है, बल्कि वह 'आभासी' भी हो चला है। स्त्री विमर्श, दलित चेतना और आदिवासी सरोकारों ने यथार्थ के फलक को और अधिक विस्तृत कर दिया है। यह विषय इस बात का अन्वेषण करता है कि बदलते समय के साथ कहानी के यथार्थ में संवेदना और शिल्प के स्तर पर क्या बुनियादी परिवर्तन आए हैं। वर्तमान दौर में जब सत्य और असत्य के बीच की रेखा धुंधली हो रही है, तब कहानी में 'यथार्थ' की पहचान करना अनिवार्य हो जाता है। यहाँ यह समझाने का प्रयत्न किया गया है कि कैसे एक कहानी समाज के बदलते हुए मूल्यों, टूटते हुए रिश्तों और हाशिए के समाज की आवाजों को अपनी विषय - वस्तु बनती है। यथार्थ के इन बदलते रंगों का अध्ययन दरअसल भारतीय समाज के मानसिक और सांस्कृतिक विकास का अध्ययन है।

(1) प्रेमचंद - पूर्व कहानी : यथार्थ का शैशव और सुधारवादी दृष्टि

20 वीं शताब्दी के प्रारंभिक डेढ़ दशक की कहानियाँ यथार्थ की 'खोज' का काल थीं। इस समय का रचनाकार समाज को जैसा देख रहा था, उसे वैसा ही प्रस्तुत करने के बजाय उसे 'सुधारने' की छटपटाहट में अधिक था। इस युग की कहानियों पर 'सरस्वती' पत्रिका और महावीर प्रसाद द्विवेदी के आदर्शों का गहरा प्रभाव था। यथार्थ को समाज सुधार के एक साधन के रूप में देखा गया। समाज की कुरीतियाँ, दहेज, अनमोल विवाह को दिखाया तो जाता था, लेकिन उसका अंत हमेशा एक उपदेश या आदर्श के साथ होता था। किशोरी लाल गोस्वामी प्रेमचंद - पूर्व युग के एक महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। उन्होंने इंदुमती कहानी में एक प्रकार का सांस्कृतिक यथार्थ प्रस्तुत किया है। उन्होंने इतिहास के गौरवशाली पात्रों के माध्यम से तत्कालीन समाज को यह संदेश देने की कोशिश की कि पतन का कारण नैतिक मूल्यों की गिरावट हैं। माधवराव सप्रे की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' यथार्थवाद के सबसे गहरे रंग को प्रस्तुत करती है। यह कहानी जमींदार के अहंकार और एक निर्धन बुढ़िया की अपनी जमीन के प्रति ममता के टकराव को दिखाती है। यहाँ पहली बार आर्थिक विषमता और मानवीय संवेदना का यथार्थ दिखता है, जिसे आगे चलकर प्रेमचंद ने विकसित किया। इसे हिंदी की पहली यथार्थवादी कहानी माना जा सकता है क्योंकि इसमें किसी चमत्कार या अलौकिकता के बजाय ठोस मानवीय स्थिति का चित्रण है। बंग महिला की 'दुलाईवाली' कहानी में यथार्थ का एक नया रंग 'घरेलू जीवन' के रूप में उभरा। इसमें मध्यमवर्गीय समाज के आपसी संवाद पहनावा, रीति - रिवाज और छोटी-छोटी नोक - झोंक का सजीव यथार्थ है। यह यथार्थ राजनीतिक होने के बजाय सांस्कृतिक और घरेलू अधिक है। इस दौर में विज्ञान और कौतूहल को भी यथार्थ के साथ जोड़ने की कोशिश की गई। केशव प्रसाद सिंह की कहानी 'चंद्रलोक की यात्रा' में कल्पना और यथार्थ का एक अनोखा मेल दिखता है, जो तत्कालीन पाठकों की जिज्ञासा को दर्शाता है।

प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी का यथार्थवाद 'कच्ची मिट्टी' की तरह था। वह कभी समाज सुधार की ओर मुड़ा, कभी घरेलू जीवन की सादगी की ओर, तो कभी ऐतिहासिक रोमांस की ओर्। यह काल दरअसल उस पृष्ठभूमि का निर्माण कर रहा था, जिस पर प्रेमचंद ने कफन जैसे कालजयी यथार्थवादी चित्र उकेरे।

(2) प्रेमचंद और यथार्थ का 'आदर्शोन्मुख' से नग्न होना

प्रेमचंद ने कहानी के यथार्थ को एक नया दर्शन दिया। उनके यहाँ यथार्थ का सफर दो छोरों के बीच फैला है। प्रारंभिक चरण में सत्य का चित्रण है, पर न्याय की जीत अनिवार्य है। जो उनकी पंच परमेश्वर कहानी के जुम्मन शेख और अलकू चौधरी के बीच का विवाद यथार्थ है, लेकिन अंत में पंच की कुर्सी पर बैठते ही जुम्मन का हृदय परिवर्तन हो जाना प्रेमचंद का आदर्श है। अंतिम चरण में यथार्थ इतना क्रूर हो जाता है कि वह पाठक की संवेदना को झकझोर देता है। 'कफन' का यथार्थ अब समाज सुधार का मोहताज नहीं है, वह व्यवस्था की उसे नग्नता को दिखाता है जहाँ भूख हर नैतिकता को निगल जाती है।

© 2026 डॉ. संगीता एम. सोलंकी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रेमचंद की 'ईदगाह' कहानी का चार साल का हामिद अपनी इच्छा का त्याग कर दादी के लिए चिमटा खरीदना है, यह यथार्थ के धरातल पर स्थिर होते हुए भी नैतिक आदर्शवाद की प्रेरणादायक मिसाल है। यह आदर्शवाद कल्पना पर आधारित नहीं बल्कि संवेदना और परिस्थिति की गहराई से निकला हुआ है। इसी तरह 'नमक का दरोगा' में रतन की ईमानदारी अंततः मान्यता प्राप्त करती है यह आदर्शवादी अंत एक प्रकार की नैतिक विजय को दर्शाता है, जो यथार्थ को पराजित नहीं करता, बल्कि उसे दिशा देता है। रामविलास शर्मा ने प्रेमचंद के बारे में कहा हैं कि – "प्रेमचंद का यथार्थवाद जनसाधारण के जीवन से जुड़ा हुआ है जो सुधार और बदलाव की आकांक्षा के साथ आता है।"(1) जैसे-जैसे प्रेमचंद का अनुभव परिपक्व हुआ और देश की राजनीतिक परिस्थितियाँ बदली, उनके आदर्शों की पकड़ ढीली होने लगी । 'सवा सेर गेहूं' जैसी कहानियों में वे शोषण के उसे चक्र को दिखाने लगे जहां से निकलना पात्र के लिए असंभव था। यह आदर्श धुंधला पड़ने लगा और यथार्थ अधिक कठोर होने लगा । प्रेमचंद की सबसे बड़ी विशेषता सहजता और साधारणता है। 'दो बैलों की कथा' हो या ईदगाह, बूढी काकी हो या मंत्र - हर कहानी में लेखक की सामाजिक संवेदना पूर्णतया स्पष्ट होती है। शिवकुमार मिश्र के अनुसार "प्रेमचंद की कहानियों के रचना शिल्प को हम सादगी का रचना - शिल्प कह सकते हैं।"(2)

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में प्रेमचंद उसे मुकाम पर पहुंच गए थे जहाँ उन्हें हृदय परिवर्तन और ईश्वरीय न्याय जैसे सिद्धांतों पर विश्वास नहीं रहा। उन्होंने जीवन को उसकी नग्नता, कुरुपता और विभीषिका के साथ प्रस्तुत किया। 'पूस की रात' कहानी में यथार्थ का क्रूर रंग देखने को मिलता है। हल्कू अपनी खेती को नील गायों से चरते हुए देखा है, पर कडाके की ठंड के कारण उठ नहीं पता। यहाँ आदर्श मर चुका है। किसान की लाचारी इतनी बड़ी है कि वह अपनी बर्बादी में भी सुख की नींद ढूंढता है। प्रेमचंद की 'कफन' कहानी अंतिम और सबसे सशक्त कहानी है। यहाँ प्रेमचंद यह नहीं कहते कि घीसू और माधव बुरे इंसान है, बल्कि वे यह दिखाते हैं कि पेट की भूख और व्यवस्था की मार मनुष्य की संवेदनाओं को पूरी तरह खत्म कर देती है। यह यथार्थ का वह नग्न रुप है जहाँ कोई आदर्श नहीं बचता। नैतिकता का अंत तब होता है जब वे कफ़न के पैसों से शराब और तली हुई मछलियाँ खाते हैं।

"घीसू गर्म होकर बोला, "मैं कहता हूं, उसे कफन मिलेगा, तू मानता क्यों नहीं ?

"कौन देगा, बताते क्यों नहीं?"

"वही लोग देंगे, जिन्होंने अब की दिया। हाँ अब की रुपए हमारे हाथ ना आएंगे।"(3)

यह नग्न यथार्थ का चरम बिंदु है जहाँ पात्र अपनी बहू की मृत्यु को कमाई का जरिया मान लेते हैं।

प्रेमचंद का आदर्श से नग्न यथार्थ की ओर जाना उनके सामाजिक चेतना के विकास का प्रतीक है। उन्होंने अनुभव किया कि जब तक समाज की जड़े खोखली है, तब तक केवल उपदेशों से बदलाव नहीं आ सकता। 'कफन' तक पहुँचते - पहुँचते प्रेमचंद एक ऐसे क्रांतिकारी रचनाकार बन गए जिन्होंने समाज को उसका असली विभत्स चहेरा आईने में दिखा दिया।

(3) आधुनिकता और यथार्थ के बदलते प्रतिमान

आजादी के बाद का यथार्थ सामूहिक से हटकर निजी हो गया। भारतीय समाज में तीव्र नगरीकरण औद्योगिकरण और पश्चिम में विचारों का प्रवेश हुआ। इस बदलाव ने मनुष्य के जीवन दृष्टि को बदल दिया । हिंदी कहानी में यथार्थ अब केवल सामाजिक चित्रण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह व्यक्ति के अस्तित्व और मानसिक व्द्न्द का पर्याय बन गया। नई कहानी आंदोलन इसी आधुनिकता बोध की उपज था, जिसने यथार्थ के पुराने प्रतिमानों को पूरी तरह नकार दिया । आधुनिकता का अर्थ केवल आधुनिक सुख -सुविधाएं नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टि है। अब लेखक सुनी - सुनाई बातों के बजाय भोगे हुए यथार्थ को प्रधानता देने लगे। भीड़ में खोए हुए व्यक्ति का अकेलापन आधुनिक यथार्थ का सबसे गहरा रंग बना। संयुक्त परिवारों का टूटना और स्त्री - पुरुष संबंधों में आई दरारें आधुनिक यथार्थ की पहचान बनी।

निर्मल वर्मा की 'परिंदे' कहानी के पात्र एक ऐसी अनिश्चितता और अकेलेपन में जी रहे हैं, जो आधुनिक जीवन की अनिवार्य नियति है। यहाँ यथार्थ बाहरी दुनिया की हलचल में नहीं, बल्कि मन के सन्नाटे में है। अज्ञेय की 'रोज' कहानी में मालती का चरित्र आधुनिक यांत्रिक जीवन के भीतर घुटते हुए अस्तित्व का जीवंत दस्तावेज है। मालती का जीवन एक तयशुदा ढरे पर चलता हैं। वहाँ पहाड़ की शांति, पति का पैसा और बच्चे का रोना - सब कुछ एक उकताहट और अकेलेपन का हिस्सा बन जाते हैं। यह आधुनिक मनुष्य के अस्तित्व का वह यथार्थ है जहाँ जीवन जीने के बजाय ढोया जा रहा है। "घंटे बजते हैं, और मालती कहती है – चार बज गए,दोपहर बीत गई" (4) यह केवल समय का विवरण नहीं बल्कि एक अस्तित्व के धीरे-धीरे खत्म होने का अस्तित्ववादी यथार्थ है।

आधुनिकता ने स्त्री को आदर्श मां या देवी की छवि से निकाल कर एक स्वतंत्र इकाई के रूप में पेश किया। मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है।' में नायिका का अंतर्द्न्द और दो पुरुषों के प्रति उसका आकर्षण पारंपरिक नैतिकता को चुनौती देता है। यह आधुनिक प्रेम और पसंद का यथार्थ है । कमलेश्वर की 'खोई हुई दिशाए' उस भटकाव को दिखाती है जो आधुनिक महानगर एक व्यक्ति को देता हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि हिंदी कहानी में यथार्थ अब स्थिर नहीं रहा। यह स्थितियों के वर्णन से बढ़कर अनुभव की प्रमाणिकता तक

© 2026 डॉ. संगीता एम. सोलंकी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पहुंच गया है। आज का यथार्थ बहुआयामी है, जिसमें तकनीक, सत्ता के षडयंत्र और मानवीय संवेदनाओं का रक्षण सब कुछ समाहित है। हिंदी कहानीकार आज समाज के हाशिए पर खड़े व्यक्ति के यथार्थ को मुख्यधारा में लाने का सफल प्रयास कर रहे हैं ।

संदर्भ सूची

1. शर्मा RV. प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1992. p. 97.
2. मिश्र S. *कहानीकार प्रेमचंद: रचना दृष्टि और रचना शिल्प.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 2002. प्रथम संस्करण. p. 43.
3. पटेल S, बंजारा G, बनकर D. *गद्य के विविध आयाम.* अहमदाबाद: पार्श्व पब्लिकेशन; 2022. प्रथम आवृत्ति. p. 16.
4. वात्सायन SH (अज्ञेय). *विपथगा.* बनारस: सरस्वती प्रेस; 1937. p. 67.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

Disclaimer: The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.

© 2026 डॉ. संगीता एम. सोलंकी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/